Dr. Jaya
Deptt. of Sociology
B.A Part-I (Hons)
Paper-2, Unit-5
Lecture Series:-73

Date-13/07/20

Topic :- Religion of Sociology

Protestant ethic

पूँजीवाद का सार स्पष्ट कर लेने के बाद वेबर ने अनेक ऐसे कारणों को प्रस्तुत किया जिनके आधार पर पूँजीवाद की उत्पत्ति को धार्मिक आधारों के संदर्भ में समझा जा सके। वेबर से पहले पेटी, मॉन्टेस्क्यू, बकल तथा कीट्स ने अपने अध्ययनों के द्वारा यह स्पष्ट किया था कि प्रोटेस्टेंट धर्म तथा व्यापारी प्रवृत्ति के विकास के बीच एक सह-संबंध है। इनसे प्रभावित होकर वेबर ने यह विचार प्रस्तुत किया कि विभिन्न धर्मों और उनसे संबंधित व्यवहार के नियमों पर इस दृष्टि से विचार किया जाना चाहिए कि वे अपने मानने वालों को किस तरह की शिक्षाएँ देते हैं तथा मनुष्य और ईश्वर के संबंधों की विवेचना के द्वारा किस तरह के आचरणों को प्रोत्साहन देते हैं। वेबर ने यह स्पष्ट करना चाहते थे कि प्रोटेस्टेंट धर्म के आधार किस प्रकार उन लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया जो आर्थिक लाभ को तार्किक दृष्टि से प्राप्त करने के पक्ष में थे। इस बात को ध्यान में रखते हुए वेबर ने एक ओर प्रोटेस्टेंट धर्म के आधारों को अनेक पादरियों से सही जानकारी प्राप्त की। तथा दूसरी ओर कैथोलिक मत की तुलना में लोगों के दैनिक आचरणों पर इन आधारों के प्रभाव को स्पष्ट किया।

प्रोटेस्टेंट धर्म के आधार के रूप में 'सेंट पॉल' ने बतलाया कि "प्रोटेस्टेंट धर्म की नीति यह है कि जो व्यक्ति कार्य नहीं करेगा वह भोजन का अधिकारी

Scanned with CamScanner

नहीं है। ईश्वर के गौरव को बढ़ाने के लिए गरीबों के साथ धनी लोगों को भी किसी-न-किसी व्यवसाय में अवश्य जुटे रहें। तथा व्यक्ति की सबसे बड़ी धार्मिक निष्ठा यह है कि वह अधिक से अधिक सक्रिय जीवन व्यतीत करे।" रिचर्ड बैक्सटर ने प्रोटेस्टेण्ट आचार पर प्रकाश डालते हुए कहा कि "परिश्रम धर्म के लिए ही ईश्वर हमारी और हमारे कार्यों की रक्षा करता है। परिश्रम ही शक्ति का नैतिक और प्राकृतिक उद्देश्य है। केवल परिश्रम से ही ईश्वर सबसे अधिक सेवा करके उसका सम्मान बढ़ाया जा सकता है।" एक अन्य इसाई संत जान बनियन ने प्रोटेस्टेण्ट धर्म के आचार को इन शब्दों में स्पष्ट किया कि "मृत्यु के बाद हमसे यह नहीं पूछा जायेगा कि तुम क्या विश्वास करते थे, केवल यह पूछा जायेगा कि तुम कुछ परिश्रम करते थे या केवल बातों में ही समय बिताते थे।"

इन कथनों से स्पष्ट होता है कि प्रोटेस्टेण्ट धर्म के आचारों ने परिश्रम पर आधारित एक विस्तृत नियमावली को जन्म दिया। इसके अनुसार समय को व्यर्थ में खोना एक घातक पाप है। जीवन क्षणभंगुर तथा मूल्यवान है, इसलिए मनुष्य को ईश्वर का गौरव बढ़ाने के लिए अपना प्रत्येक क्षण उपयोगी व्यवसाय में लगाना चाहिए। व्यर्थ की बात-चीत, लोगों से अधिक मिलना-जुलना, आवश्यकता से अधिक सोना तथा दैनिक क्रियाओं को हानि पहुँचाकर धार्मिक क्रियाओं में लगे रहना पाप है क्योंकि इनके कारण व्यक्ति आजीविका उपार्जित करने के कार्य को ईश्वर की इच्छा के अनुरूप सक्रिय ढंग से पूरा नहीं कर सकता है।

इस दृष्टिकोण से प्रोटेस्टेण्ट धर्म की नीतियाँ "वैयक्तिक आचार के इस आदर्श के विरुद्ध हैं कि सभी व्यक्ति कोई भी काम न करें अथवा यह कि आत्मिक ध्यान व्यक्ति के सांसारिक दायित्वों से अधिक मूल्यवान है।"

Scanned with CamScanner